सप्तमः पाठः

जीव्याद् भारतवर्षम्

(भारतवर्ष अमर रहे)

*[प्रस्तुत गीत डॉ0 चन्द्रभानु त्रिपाठी के उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत **गीताली** नामक काव्य-संकलन से संग्रहीत है। डॉ0 त्रिपाठी ने अनेक आलोचनात्मक ग्रन्थ, शोध लेख, कविताएँ, गीत तथा नाटक लिखे हैं। प्रस्तुत कविता के **प्रथम पद** में भारत की मनोरमता एवं भव्यता का सुन्दर चित्र खींचा गया है। हिमालय भारत का शुभ्र किरीट है जिस पर पड़ती हुई उदीयमान सूर्य की लाल किरणें मणियों की भ्रान्ति कराती हैं। समुद्र अपने कल्लोलरूपी हाथों से सदा इस देश के पाँव पखारता रहता है। सरिताएँ उसके वक्षःस्थल पर पड़े हुए हार हैं तो हरे-भरे वन्य-प्रान्त उसका रंगीन परिधान। **द्वितीय पद** में कवि भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग और वर्ण को देश की उन्नति के लिए एकजुट होकर काम करने की सलाह देता है, जिससे मानव-धर्म का सर्वत्र प्रसार हो सके। **तृतीय पद** में कवि भारतीय संस्कृति में अपनी पूर्ण आस्था व्यक्त करता हुआ इच्छा व्यक्त करता है कि इस देश में पुनः गीता से हम कर्मयोग की शिक्षा प्राप्त करें। गौतम बुद्ध की करुणा और मैत्री का सन्देश सब ओर फैले और भारत के उत्कृष्ट वीरों की गाथाओं का सर्वत्र प्रचार हो। अन्त में कवि कामना करता है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ, सुखी एवं समृद्ध हो तथा हमारा भारत एक स्वाधीन राष्ट्र के रूप में चिरकाल तक जीवित रहे।]*

भारतवर्षं राष्ट्रं जीव्याच्चिर-कालं स्वाधीनम्।
सन्मित्रं भूयाच्च समृद्धम् जीयाच्छत्रु-विहीनम्।।
हिमगिरिरस्य किरीटो मौलेररुण-किरण-मणि-माली।
कर-कल्लोलैर्जलधिर्विलसति पादान्त-प्रक्षाली।।
सरितो वक्षसि हारा विन्ध्यो भाति मेखला-मानम्।
पल्लव-लसिता निबिड-वनाली रुचिरं नव-परिधानम्।
आस्ते कविकुलमस्य मनोरम-रूप-वर्णने लीनम्।।1।।

सर्वे ज्ञान-धना बुध-वर्या मान-धना रण-धीराः।
स्वर्ण-धना व्यवसायि-धुरीणास्तथा श्रम-धना वीराः।।
कुर्वन्त्वेकीभूय समेता नव-समाज-निर्माणम्।
मान्यो मानव-धर्मः प्रसरतु सम्परिशोध्य पुराणम्।।
आत्मशक्ति-संवलित-मानवः पाठं पठेन्नवीनम्।।2।।

प्रवहतु गङ्गा पूततरङ्गा प्रथयन्ती महिमानम्।
गायतु गीता कर्ममहत्त्वं योग-क्षेम-विधानम्।।
भवेदहिंसा करुणासिक्ता तथा सूनृता वाणी।
प्रसरेद् भारत-सद्वीराणां गाथा भुवि कल्याणी।।
देशे स्वस्थः सुखितो लोको भावं भजेन्न दीनम्।
भारतवर्षं राष्ट्रं जीव्याच्चिर-कालं स्वाधीनम्।।3।।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए–
   (क) सर्वे ज्ञान-धना ..... पठेन्नवीनम्।
   (ख) हिमगिरिरस्य ..... लीनम्।
   (ग) प्रवहतु ..... स्वाधीनम्।
   (घ) प्रवहतु ..... विधानम्।
   (ङ) भवेदहिंसा ..... कल्याणी। **(2018HP)**
   अथवा भवेदहिंसा करुणासिक्ता ..... कालं स्वाधीनम्।
2. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए–
   (क) भारतवर्षं राष्ट्रं जीव्याच्चिर-कालं स्वाधीनम्।
   (ख) सूनृता वाणी।
   (ग) आत्मशक्ति-संवलित-मानवः पाठं पठेन्नवीनम्। **(2020MP)**
   (घ) गायतु गीता कर्ममहत्त्वं योग-क्षेम-विधानम्। **(2019AO)**
3. निम्नलिखित श्लोकों का संस्कृत में अर्थ लिखिए–
   (क) सर्वे ज्ञान- ..... वीराः।
   (ख) प्रवहतु ..... विधानम्।
   (ग) देशे स्वस्थः ..... स्वाधीनम्।
4. पूरी कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

भारतवर्ष के लिए आपके अंतर्मन में क्या-क्या सपने हैं? अपनी लेखनी द्वारा शब्दबद्ध कीजिए।

●